



उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) के फल विज्ञान विभाग के शोध प्रबंधों का प्रवृत्ति विश्लेषण : एक समीक्षा

रामनिवास शर्मा¹, एच. सी. भारवे¹, प्रदीप कुमार दीक्षित²

सारांश

इस लेख में फल विज्ञान विषय के शोध प्रबंधों का ग्रंथमिति विश्लेषण किया गया है। यह बागवानी महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) के अध्ययन पर आधारित है। अध्ययन की अवधि को 2015 से 2024 तक चुना गया है जो 62 शोध प्रबंधों को सम्मिलित करता है। यह अध्ययन फल विज्ञान संकाय में पंजीकृत संबंधित एम.एससी शोध प्रबंधों की सांख्यिकीय सूचना/विश्लेषण प्रदान करता है, जिन्हें वर्ष, मार्गदर्शक, उपयोग की गई किस्म के अनुसार वर्गीकृत किया गया है।

मुख्य शब्द: ग्रंथमिति विश्लेषण, फल विज्ञान, बागवानी महाविद्यालय।

Trend Analysis of Theses of the Fruit Science Department of the College of Horticulture Mandsaur (M.P.): A Review

Ramnivas Sharma¹, H.C. Bharvey¹, Pradeep Kumar Dixit²

10.18805/BKAP927

ABSTRACT

This article conducts a bibliometric analysis of dissertations in Fruit Science. It is based on a study conducted by the Horticulture College, Mandsaur (MP). The period of study has been selected from 2015 to 2024, which includes 62 dissertations. This study provides statistical information/analysis of relevant M.Sc. dissertations registered in the Fruit Science Faculty, categorized by year, mentor and variety used.

Key words: Bibliometric analysis, Fruit science, Horticulture College.

शोध प्रबंध एवं लघु शोध प्रबंध सूचना के अद्भुत एवं अद्वितीय स्रोत हैं। इन स्रोत से जो ज्ञान प्राप्त होता है वह अन्य किसी सूचना स्रोत से प्राप्त नहीं हो सकता है। ये शोध के दोहराव एवं समय तथा श्रम आदि की बचत करते हैं। यह किसी क्षेत्र विशेष से सम्बंधित सूचना के महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत होते हैं। इसकी मदद से एक शोधार्थी के ज्ञान कौशल एवं कार्य क्षमता का मूल्यांकन किया जा सकता है। आज शोधार्थी के समक्ष यह समस्या बनी रहती है कि वह जिस कार्य को कर रहा है कहीं वह कार्य की द्विरावृत्ति दोहराव न हो। शोध प्रत्येक देश के विकास के लिए एक आवश्यक एवं अनिवार्य क्रियाकलाप है। शोध मानव का ऐसा प्रयास है जो मानव ज्ञान को सुदृढ़, वास्तविक एवं परिपूर्ण बनाता है। शोधार्थी अपने ज्ञान या शोध परिणाम को शोध प्रबंध (Thesis) के रूप में प्रस्तुत करते हैं। शोध प्रबंध भारत के परम्परागत विश्वविद्यालयों एवं शोध केन्द्रों में हो रही शोध का परिणाम है, जिससे भविष्य के शोधार्थी लाभान्वित होते हैं। शोध एक

¹Central Library, Rajmata Vijayaraje Scindia Agricultural University, Gwalior-474 002, Madhya Pradesh, India.

²Jawaharlal Nehru Agricultural University, Jabalpur-482 004, Madhya Pradesh, India.

Corresponding Author: Ram Nivas Sharma, Central Library, Rajmata Vijayaraje Scindia Agricultural University, Gwalior-474 002, Madhya Pradesh, India. Email: dr.ramnivas@gmail.com

How to cite this article: Sharma, R., Bharvey, H.C. and Dixit, P.K. (2026). Trend Analysis of Theses of the Fruit Science Department of the College of Horticulture Mandsaur (M.P.): A Review. *Bhartiya Krishi Anusandhan Patrika*. **41(3)**: 261-266. doi: 10.18805/BKAP927.

Submitted: 12-03-2026 **Accepted:** 03-07-2026 **Online:** 18-09-2026

ऐसी गतिविधि है, जिसमें नवीन ज्ञान की खोज एवं उपलब्ध ज्ञान को सत्यापित करने का प्रयास किया जाता है। यह एक उच्च बौद्धिक क्रियाकलाप है, जिसमें शोधकर्ता उपलब्ध ज्ञान के सहारे नवीन तथ्यों और सूचनाओं की खोज करता है।

ग्रंथमिति

“बिब्लियोमेट्रिक्स” शब्द, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। यह किसी दिए गए क्षेत्र या साहित्य के समूह के भीतर प्रकाशनों के पैटर्न का वर्णन करने के लिए मात्रात्मक विश्लेषण और सांख्यिकी का उपयोग करता है। बिब्लियोमेट्रिक्स शब्द पहली बार 1969 में, “जर्नल ऑफ डॉक्यूमेंटेशन” (Journal of Documentation) के दिसंबर अंक में, एलन पिचर्ड (Pitchard, 1969) के लेख “सांख्यिकीय ग्रंथ-सूची या बिब्लियोमेट्रिक्स” (Statistical Bibliography or Bibliometrics) में छपा था। 20वीं सदी की शुरुआत में लोत्का (Lotka, 1926), ब्रैडफोर्ड (Bradford, 1985) और जिपफ (Zipf, 1942) के कार्यों के साथ इसका विकास हुआ। इन विद्वानों ने शब्दों की आवृत्ति, लेखकों और पत्रिकाओं की उत्पादकता में वितरण के पैटर्न का अध्ययन किया था। पूर्वी यूरोपीय देशों में विज्ञान और वैज्ञानिकों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए बिब्लियोमेट्रिक विधियों का उपयोग किया गया है। सेनगुप्ता (Sengupta, 1992) ने बिब्लियोमेट्रिक्स को इस प्रकार परिभाषित किया है— सभी वृहद (Macro) और सूक्ष्म (Micro) संचारों के प्रकाशन पैटर्न का, उनके लेखकों सहित, गणितीय और सांख्यिकीय गणनाओं के माध्यम से संगठन, वर्गीकरण और मात्रात्मक मूल्यांकन के रूप में परिभाषित किया है।

कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर, मंदसौर

कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर, मंदसौर (चित्र 1) को वर्ष 1987–2002 से पहले कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर के नाम से जाना जाता था। 4 अक्टूबर, 2002 को इसे K.N.K. कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर,

मंदसौर में बदल दिया गया। यह कॉलेज UG और कुछ PG स्तर के कोर्स में शिक्षा प्रदान करता है।

PG स्तर की डिग्री 6 विभागों में उपलब्ध है, जैसे फल विज्ञान, पुष्पकृषि और भूदृश्य-सज्जा, औषधीय और सुगंधित पौधे, बागान और मसाला फसलें, कटाई-पश्चात प्रबंधन और सब्जी विज्ञान। PG और UG कार्यक्रमों में सामान्य सीटों के अलावा, नियमों के अनुसार पेमेंट सीटें, NRI सीटें और ICAR सीटें भी उपलब्ध हैं। इस कॉलेज में अच्छी लाइब्रेरी, प्रयोगशालाएँ, लड़के और लड़कियों के लिए हॉस्टल और खेल-कूद की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

कार्यप्रणाली

बिब्लियोमेट्रिक विश्लेषण के अनुप्रयोग के लिए आवश्यक डेटा, कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर, मंदसौर (म.प्र.) में जमा की गई शोध-प्रबंधों से तैयार किए गए डेटाबेस के मुद्रित संस्करण से एकत्र किया गया था। इस डेटा को सारणीबद्ध और आलेखीय रूप में प्रस्तुत किया गया है। डेटा को एक Excel वर्कशीट में व्यवस्थित रूप से दर्ज किया गया, जिससे उसका कुशल संगठन और विश्लेषण संभव हो सका। प्रत्येक प्रविष्टि को शोध प्रबंध के वर्ष, शोधकर्ता के लिंग, शोध प्रबंध मार्ग दर्शक और छात्रों द्वारा उपयोग की गई फलों की किस्मों के आधार पर वर्गीकृत किया गया।

मुख्य उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. फल विज्ञान के विकास तथा अनुसंधान की प्रवृत्तियों का निरीक्षण करना।



चित्र 1: के. एन. के. कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर, मंदसौर (म.प्र.)

2. फल विज्ञान के साहित्य के उत्पादन का संख्यात्मक अध्ययन करना।
3. कालानुसार, शोधार्थी की स्थिति, अर्थात् लिंग तथा किस्म के आधार पर संख्यात्मक अध्ययन करना।
4. फल विज्ञान के सर्वोच्च उपयोगी विषयों पर प्रकाश डालना।
5. मार्गदर्शकों के आधार अनुसंधान में योगदानों का संख्यात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन का क्षेत्र

इस अध्ययन में फल विज्ञान विषय के शोध प्रबंधों का ग्रंथमिति विप्लेशन किया गया है जो 2015 से 2024 तक उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) में पंजीकृत हुए हैं। यह अध्ययन साहित्य की वृद्धि और उसके उपयोग की वृद्धि को प्रदर्शित करता है। इस आलेख में 62 शोध प्रबंधों का विश्लेषण किया गया है।

सीमाएँ

इस अध्ययन की सीमाएँ निम्नलिखित हैं :

1. शोध अध्ययन का क्षेत्र केवल फल विज्ञान के शोध प्रबंधों तक ही सीमित है।
2. इस शोध में 2015 से 2024 तक उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) में पंजीकृत शोध प्रबंधों को शामिल किया गया है।
3. प्रत्येक शोध प्रबंध का विश्लेषण करके उसका मार्गदर्शक, शोधार्थी, प्रकाशन वर्ष आदि को संकलित किया जाएगा।

आंकड़ों का विश्लेषण

इस शोध अध्ययन में एम.एससी शोध प्रबंध, फल विज्ञान संकाय में पंजीकृत हुए हैं, का वर्ष, मार्गदर्शक, उपयोग की गई किस्म के अनुसार सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

कालानुसार वितरण

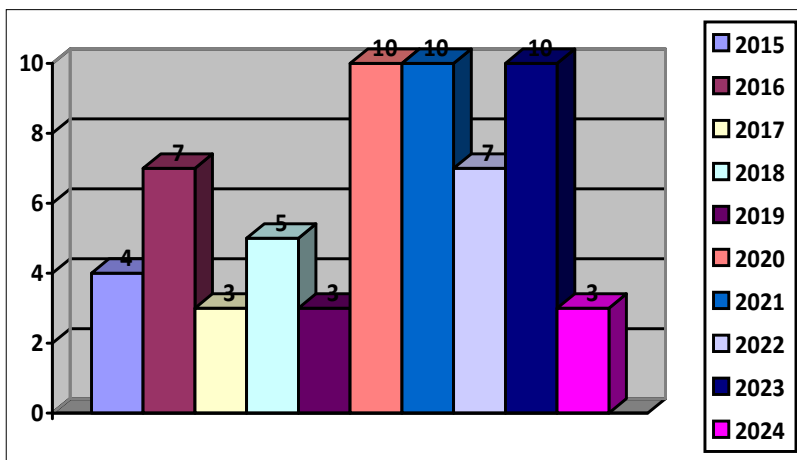
इस शोध अध्ययन में 2015 से 2024 तक के पंजीकृत शोध प्रबंधों को ही सम्मिलित किया गया है। तालिका 1 एवं चित्र 2 में कालानुसार 2015 से 2024 तक उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) में पंजीकृत फल विज्ञान विषय के शोध प्रबंधों को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका में कुल 62 शोध प्रबंधों को प्रदर्शित किया गया है। सर्वाधिक शोध प्रबंध 2020, 2021 एवं 2023 (अर्थात् 10, 10, 10) में पंजीकृत किए गए हैं जिसके कारण ये प्रथम स्थान पर विद्यमान हैं। 2016 एवं 2022 में 07, 07 शोध प्रबंध पंजीकृत किए गए हैं।

शोधार्थी की स्थिति

शोधार्थी की स्थिति, अर्थात् लिंग का शोध में एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह शोध परिणाम पर पूर्ण रूप से प्रभाव डालता है। इस शोध आलेख में उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) के फल विज्ञान विभाग के शोधार्थियों की स्थिति पर प्रकाश डाला

तालिका 1: कालानुसार शोध प्रबंधों की स्थिति।

वर्ष	कुल शोध प्रबंध	रैंक
2015	04	IV
2016	07	II
2017	03	V
2018	05	III
2019	03	V
2020	10	I
2021	10	I
2022	07	II
2023	10	I
2024	03	V
कुल	62	



चित्र 2: कालानुसार शोध प्रबंधों की स्थिति (Year-wise status of thesis)।

गया है। 2015 से 2024 तक उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) में कुल 62 शोध प्रबंध फल विज्ञान संकाय में पंजीकृत हुए हैं। तालिका 2 में उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) के शोध प्रबंधों को प्रदर्शित किया गया है। तालिका 2 एवं चित्र 3 के विवरण से ज्ञात होता है कि 46 छात्र शोधार्थी एवं केवल 16 शोधार्थी छात्राएं हैं।

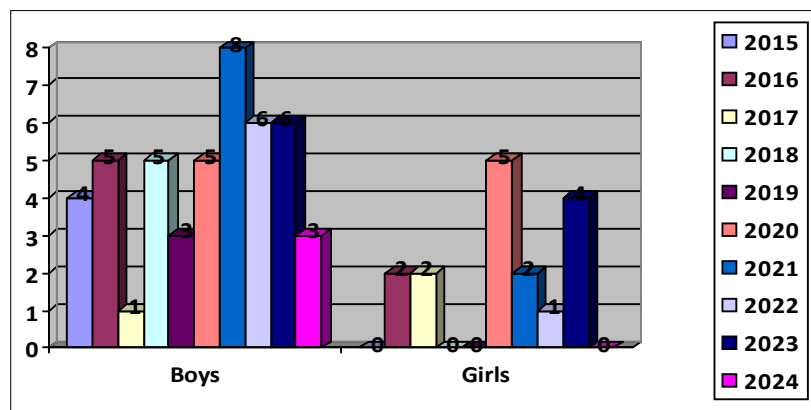
शोध निदेशक के अनुसार वितरण

प्रत्येक विषय में शोध डिग्री प्राप्त करने में शोध निदेशक की भूमिका सबसे अहम् है। आज प्रत्येक विश्वविद्यालय/शोध

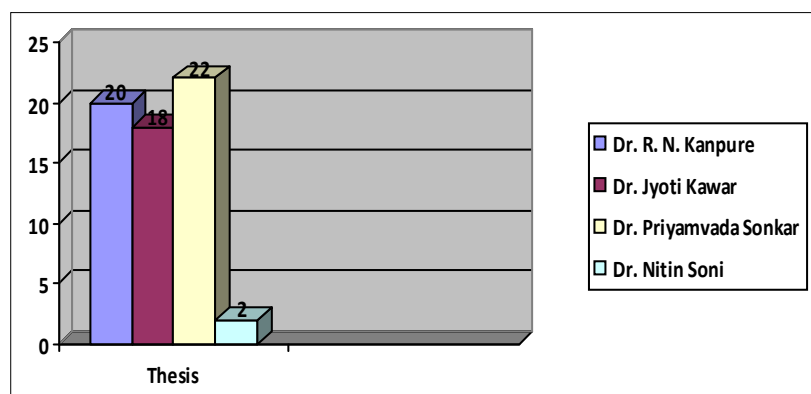
संस्थान शोधार्थी एवं शोध निदेशक दोनों के लिए कुछ नियम एवं मानक तय किए हुए हैं। शोध निदेशक अपने अमूल्य समय एवं मार्गदर्शन का उपयोग शोधार्थी के शोध कार्य को पूर्ण करने में करता है। तालिका 3 एवं चित्र 4 में प्रमुख शोध निदेशक को ही प्रदर्शित किया गया है। 62 शोध प्रबंधों का मार्गदर्शन कुल 04 शोध निदेशक ने किया है। सर्वाधिक शोध मार्गदर्शन डॉ. प्रियंवदा सोनकर का रहा है। उन्होंने 22 शोध प्रबंधों का मार्गदर्शन किया है। दूसरा स्थान पर डॉ. आर. एन. कानपूरे रहें हैं। उन्होंने 20 शोध प्रबंधों का मार्गदर्शन किया है।

तालिका 3: शोध निदेशक के अनुसार शोध प्रबंधों की स्थिति।

शोध निदेशक का नाम	कुल शोध प्रबंध	रैंक
डॉ. आर. एन. कानपूरे Dr. R.N. Kanpure	20	II
डॉ. ज्योति कँवर Dr. Jyoti Kavar	18	III
डॉ. प्रियंवदा सोनकर Dr. Priyamvada Sonkar	22	I
डॉ. नितिन सोनी Dr. Nitin Soni	02	IV
कुल	62	



चित्र 3: कालानुसार शोध प्रबंधों की स्थिति (Status of Researchers)।



चित्र 4: शोध निदेशक के अनुसार शोध प्रबंधों की स्थिति।

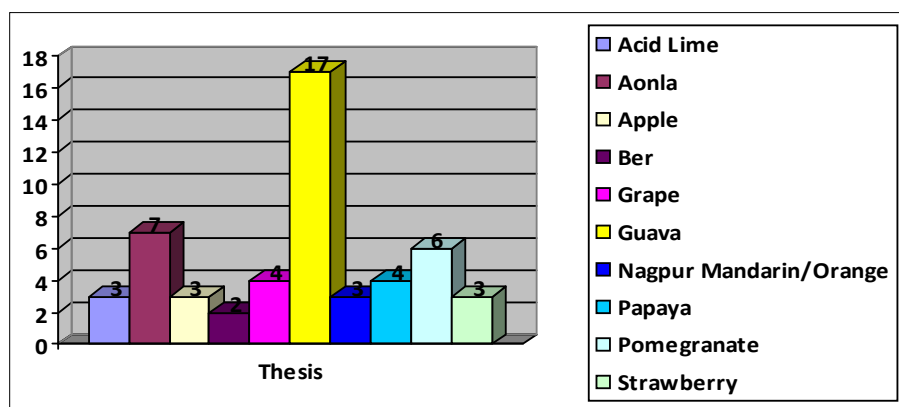
उपयोग की गई किस्म के अनुसार वितरण

शोध प्रबंधों के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि फल विज्ञान विषय के क्षेत्र में जो शोध प्रबंध पंजीकृत हुए हैं वे सह-संबंधित विषयों/उप-वर्गों से संबंधित हैं। शोधार्थी फल विज्ञान विषय की किसी भी शाखा में अपने शोध कार्य को सम्पन्न कर सकता है।

उपयोग की गई किस्म के अनुसार शोध प्रबंधों को तालिका 4 एवं चित्र 5 में प्रस्तुत किया गया है। उपयोग की गई किस्म के वर्गीकरण से यह स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक शोध प्रबंध अमरुद (Guava) पर हैं। इस किस्म पर कुल 17 शोध प्रबंध पंजीकृत हुए हैं। आंवला (Aonla) किस्म पर 07 शोध प्रबंध पंजीकृत हुए हैं।

तालिका 4: उपयोग की गई किस्म के अनुसार शोध प्रबंधों की स्थिति।

उपयोग की गई किस्म (Variety)	कुल शोध प्रबंध	रैंक
एसिड लाइम (Acid Lime)	03	IV
आंवला (Aonla)	07	II
सेब (Apple)	03	IV
सेब बेर (Apple Ber)	01	VI
बेर (Ber)	02	V
केप गूजबेरी (Cape Gooseberry)	01	VI
चिरौंजी (Chironji/Almondette/Cuddapah Almond)	01	VI
साइट्रस (Citrus)	01	VI
ड्रैगन फ्रूट (Dragon Fruit/Pitaya/Pitahaya)	01	VI
अंगूर (Grape)	04	III
अमरुद (Guava)	17	I
हार्डवुड (Hardwood)	01	VI
नींबू (Lime)	01	VI
आम (Mango)	01	VI
शहतूत (Mulberry)	01	VI
नागपुर मंदारिन (Nagpur Mandarin/Orange)	03	IV
पपीता (Papaya)	04	III
अनार (Pomegranate)	06	III
स्ट्रॉबेरी (Strawberry)	03	IV
इमली (Tamarind)	01	VI
कुल	62	



चित्र 5: उपयोग की गई 10 किस्म के अनुसार शोध प्रबंधों की स्थिति।

निष्कर्ष

शोध प्रबंधों पर ग्रंथमिति तकनीक का उपयोग कर विश्लेषण किया गया है। इसमें कई दिलचस्प परिणाम निकलकर सामने आए हैं:

- तालिका 1 एवं चित्र 2 में कालानुसार शोध प्रबंधों की स्थिति को स्पष्ट किया गया है। 2020, 2021 एवं 2023 में सर्वाधिक शोध प्रबंध दर्ज हुए हैं।
- तालिका 2 एवं चित्र 3 में शोधार्थियों की स्थिति के अनुसार शोध प्रबंधों को व्यवस्थित किया गया है। तालिका 2 के विवरण से ज्ञात होता है कि 46 छात्र शोधार्थी एवं केवल 16 शोधार्थी छात्राएं हैं।
- तालिका 3 एवं चित्र 4 में निदेशक के अनुसार शोध प्रबंधों की स्थिति को स्पष्ट किया गया है। सर्वाधिक शोध मार्गदर्शन डॉ. प्रियंवदा सोनकर का रहा है। उन्होंने 22 शोध प्रबंधों का योगदान देकर तालिका में प्रथम रैंक हासिल की हुई है। दूसरा स्थान डॉ. आर. एन. कानपुरे है। उन्होंने 20 शोध प्रबंधों का मार्गदर्शन किया है।
- तालिका 4 एवं चित्र 5 में शोध में उपयोग की गई किस्म के अनुसार शोध प्रबंधों को व्यवस्थित किया गया है। सबसे अधिक

शोध प्रबंध अमरुद (Guava) किस्म पर हैं। इस किस्म पर कुल 17 शोध प्रबंध पंजीकृत हुए हैं।

हितों के टकराव

सभी लेखक यह घोषित करते हैं कि इस शोध/पांडुलिपि के संबंध में उनका कोई ज्ञात वित्तीय, व्यक्तिगत या व्यावसायिक हितों का टकराव नहीं है, जो इस अध्ययन के परिणामों या निष्कर्षों को प्रभावित कर सकता हो।

संदर्भ

- Bradford, S.C. (1985). Sources of information on specific subjects. *Journal of Information Science*. **10(4)**: 173-180.
- <https://www.rvskvv.net/>.
- Lotka, A.J. (1926). The frequency distribution of scientific productivity. *Journal of the Washington Academy of Sciences*. **16**: 317-323.
- Pritchard, A. (1969). Statistical Bibliography or Bibliometrics?. *Journal of Documentation*. **25(4)**: 348-349.
- Sengupta, I.N. (1992). Bibliometrics, informetrics, scientometrics and librametrics: An overview. *Libri*. **42**: 75-98.
- Zipf, G.K. (1942). The Unity of Nature, Least-Action and Natural Social Science. *Sociometry*. **5(1)**: 48-62.